Toppersnotes®
Unleash the topper in you

# 1st – ग्रेड

## स्कूल व्याख्याता

## राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

### हिन्दी, पेपर II

**भाग – 2**

**स्नातक स्तर**

SIERRA INNOVATIONS

# RPSC 1ST GRADE HINDI

## स्कूल व्याख्याता ग्रेड –।


| स्नातक स्तर | | |
|---|---|---|
| 1. | हिन्दी साहित्य का इतिहास | |
| | • इतिहास लेखन की परम्परा | 1 |
| | • आदिकाल | 27 |
| | • भक्तिकाल | 48 |
| | • रीतिकाल | 143 |
| | • आधुनिक काल | 192 |

# हिन्दी साहित्य का इतिहास

:- अतीत के तथ्यों का वर्णन विश्लेषण, जो कालक्रमानुसार किया गया हो, इतिहास कहा जाता है।

:- **इतिहास शब्द की उत्पत्ति / अर्थ** :-

इतिहास शब्द इति + ह + अस शब्द के योग से बना है जिसका अर्थ निम्न है

इति → ह → अस
↓ ↓ ↓
समाप्त, निश्चित, होना [जिसकी समाप्ति हो चुकी हो, वही इतिहास है।]

**इतिहास का शब्द कोश के अनुसार अर्थ** :-

**ऐसा ही हुआ था / ऐसा ही था।**

:- साहित्य का इतिहास सामान्य इतिहास से भिन्न होता है।

:- सामान्य इतिहास में मुख्यत राजनीति, समाज, धर्म, संस्कृति आदि पर विचार किया जाता है। वहीं साहित्य के इतिहास में कुछ विशिष्ट लोगों की विशिष्ट क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

**महर्षि वेदव्यास** :- वह रचना जिसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों के उपदेशों का समन्वय किया जाता है तथा जिसमें पूर्व मे घटित हो चुकी घटनाओं का उल्लेख भी किया जाता है वही इतिहास है।

**कार्लाइल** :- इतिहास एक ऐसा दर्शन है, जो दृष्टांतो के द्वारा शिक्षा प्रदान करता है।

**हिंगल** :- इतिहास केवल घटनाओं का अन्वेषण व संकलन मात्र नही है, बल्कि उसके भीतर कार्य कारण की शृंखला विद्यमान है।

**इलियट:-** केवल अतीत ही वर्तमान को प्रभावित नही करता बल्कि वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता है।

**बिको:-** इतिहास का संबंध न केवल इतिहास से है बल्कि वर्तमान से भी है और इतिहास का निर्माता स्वयं मनुष्य है।

:- इतिहास के प्रति पाश्चात्य दृष्टिकोण - यथार्थवादी रहा है।

**नोट:-** **इतिहास लेखन के प्रति भारतीय द्रष्टिकोण आदर्श मूलक एवं इध्यात्मकवादी रहा है।**

इतिहास के पिता:- हैरोडोट्स

:- हैरोडोट्स ने इतिहास के चार लक्षण निर्धारित किए हैं।

- इतिहास वैज्ञानिक विधि है, अतः इसकी पद्धति आलोचनात्मक होती है।
- इसके तथ्य, निष्कर्ष एवं प्रमाण पर आधारित होते हैं।
- मानव जाति से संबंधित है।
- यह अतित के आलोक में भविष्य पर प्रकाश डालता है।

*: साहित्य - मनुष्य के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन का विश्लेषण साहित्य है।

साहित्य शब्द की उत्पति, अर्थ:→

साहित्य शब्द स + हित + य के योग से बना है जिसका अर्थ है - मिश्रण / मिला हुआ

:- गद्य-पद्य का समिल्लित रूप ही साहित्य है।

- **फ्रेंच विद्वान तेन** ने साहित्य के इतिहास के लिए मुख्यतः तीन तत्व स्वीकार किये हैं→ जाति, वातावरण, क्षण विशेष

:- **हडसन** नें आरोप लगाया कि तेन नें साहित्य के विकास का सारा महत्त्व तीन तत्वों में दे दिया, जबकि साहित्यकार व रचयिता की उपेक्षा कर दी।

:- **हड़सन** ने ~~साहित्य के पाँच तत्त्व बताये हैं।~~ तेन की आलोचना करते हुए कवि के व्यक्तित्व को पर्याप्त महत्व दिया है।

:- डा० गणपतिचन्द्र गुप्त नें साहित्य के इतिहास में निम्न पाँच तत्त्व महत्त्वपूर्ण माने हैं।

(1) सृजन शक्ति (2) परम्परा (3) वातावरण (4) द्वंद्व (5) संतुलन

:- **जर्मन चिंतको ने युग चेतना का सिद्धांत प्रतिपादित किया–**

साहित्य इतिहास की व्याख्या तद्युगिन युग चेतना के आधार पर होनी चाहिए।

शब्द कोश के अनुसार :- सामान्यत मनुष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन का विश्लेषण ही साहीत्य है।

*: **रामचन्द्र शुक्ल** :- प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चितवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है। आदि से अन्त तक इन्ही चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका सांमजस्य बिठाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।

डा० नगेन्द्र :- "साहित्य का इतिहास बदलती हुई अभिरूचियों एवं संवेदनाओं का इतिहास होता है जिसका सीधा संबंध, आर्थिक, चिन्तनात्मक, परिवर्तन से माना जाता है।

:- **साहित्य इतिहास लेखन की प्रमुख पद्धतियाँ :–**

किसी भी साहित्य का इतिहास लिखने के लिए निम्न चार पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है।

(1) वर्णानुक्रम पद्धति
(2) कालक्रमानुक्रम पद्धति
(3) वैज्ञानिक पद्धति
(4) विधेयवादी पद्धति

(1) **वर्णानुक्रम पद्धति** :- इस पद्धति में लेखकों, कवियों का परिचयात्मक विवरण उनके नामों के वर्णानुक्रम के अनुसार किया जाता है।

:- इस पद्धति को "**वर्णमाला पद्धति**" भी कहा जाता है।

:- हिन्दी साहित्य में **गार्सा – द – तासी एवं शिवसिंह सेंगर** ने इस पद्धति का प्रयोग किया है।

(2) **कालानुक्रमी पद्धति** :- इस पद्धति में कवियों एवं लेखकों का विवरण ऐतिहासिक कालक्रमानुसार तिथिक्रम से होता है

:- **जार्ज ग्रियर्सन एवं मिश्र बंधुओ** ने इसी पद्धति का प्रयोग किया है।

(3) **वैज्ञानिक पद्धति** :- इस शैली में इतिहासकार निरपेक्ष एवं तटस्थ रहते हुए तथ्यों का क्रमबंध एवं सुव्यवस्थित संग्रह करता है।

:- हिन्दी साहित्य में **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी डा. गणपति चन्द्र गुप्त** ने इसी पद्धति का प्रयोग किया है।

(4) **विधेयवादी पद्धति** :- साहित्य का इतिहास लिखने में यह पद्धति सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुई है। **इस विधि के जनक**

**तेन** माने जाते हैं जिन्होने विधेयवादी पद्धति को तीन शब्दो मे बांटा है – जाति, वातावरण, क्षण विशेष

:- **हिन्दी साहित्य में इस पद्धति को अपनाने का श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल"** को जाता है।

## हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा

:- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का वास्तविक सूत्रपात 19वीं शताब्दी से माना जाता है। **सर्वप्रथम गार्सा द तासी द्वारा 1839 में फ्रेंच भाषा में लिखा गया था।** । परन्तु इससे पूर्व भी कुछ रचनाएँ ऐसी प्राप्त होती हैं, जिनमें हिन्दी साहित्य के कुछ लक्षण देखे जा सकते हैं।

(1) **चौरासी वैष्णव की वार्ता (वल्लभाचार्य के शिष्यों का वर्णन) गोकुलनाथ – 1568**

(2) **दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता (विट्ठलनाथ के शिष्यों का वर्णन ) गोकुलनाथ – 1568**

(3) भक्तमाल (200 छप्पय) – नाभादास (1585)

(4) वल्लभदिग्विजय – यदुनाथ

(5) कविमाला – हरिराय

(6) कालिदास हजारा – कालिदास त्रिवेदी

(7) सुंदरी तिलक – हरिश्चन्द्र

(8) राग सागरोद्भव (राग कल्पद्रुम) – कृष्णानन्द व्यास

(9) विद्वान मोद तरंगिणी – सुब्बासिंह

(10) विचित्रोपदेश – ककछेदी तिवारी

(11) कवित्त रत्नाकर – मातादीन मिश्र

(12) मूल गुसाईं-चरित – बाबा बेनीमाधव दास

(13) मुक्ति सरोवर – लाला भगवानदीन

(14) हिन्दूईज्म एण्ड ब्राह्मनिज्म – मॉनियर विलियम

एनाल्स एण्ड एण्टिक्वीटीज ऑफ राजस्थान – कर्नल टॉड
गोरखनाथ एण्ड द कनफटा योगीज – ब्रिग्स
काव्य निर्णय – भिखारीदास
भक्त नामावली – ध्रूवदास
कवि नामावली – सूदन

हिन्दी साहित्य के इतिहास को सर्वप्रथम लिखने का प्रयास

1. **गार्सा द तासी** -

हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम इतिहास तासी द्वारा लिखा गया था।

रचना – **इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी (1839ई.)**

इस्तवार – इतिहास, लितरेत्यूर – साहित्य
ऐन्दुई – हिन्दुओं की शुद्ध हिन्दी
ऐन्दुस्तानी – मुसलमानों द्वारा बोली जाने वाली उर्दू मिश्रित हिन्दी

विशेष :- यह रचना **फ्रेंच भाषा** में रचित है।
:- यह रचना **दो संस्करण** व **पाँच भागों** में प्रकाशित हुई।

प्रथम संस्करण → (दो भागो में)
1839 ई. मे प्रथम भाग
1847 ई. में द्वितीय भाग

दूसरा संस्करण – (तीन भागो में)
1870 ई. मे प्रथम। द्वितीय भाग
1871 ई. में तीसरा भाग

**रचना का प्रकाशन – द ऑरियंटल ट्रांसलेशन कमेटी आयरलैण्ड**

:- "मौलवी करीमुद्दीन" ने 1848 ई. में तबकात-उ शुअरा। तजकिरा शुअरा-ई" हिन्दी नाम से उर्दू भाषा मे अनुवाद किया था।

डा॰ **लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय** (हिन्दी विभागाध्यक्ष वि॰ वि॰ प्रयाग) ने गार्सां द तासी के ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद "हिन्दुई साहित्य का इतिहास" नाम से प्रकाशन सन् 1953 ई॰ में करवाया था।

:- गार्सां द तासी के ग्रंथ में कुल 738 कवि हैं जिनमें से हिन्दी के 72 कवि (प्रथम कवि - अंगद, अन्तिम - हेमन्त पंत) व उर्दू के 666 कवि हैं।

:- आचार्य **रामचन्द्र शुक्ल** ने इस रचना को "वृत संग्रह" मात्र कहकर पुकारा है।

:- यह एक विदेशी विद्वान के द्वारा हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने का सराहनीय प्रयास किया गया।

कमी:- इस रचना में इतिहास लेखन की वर्णानुक्रम पद्धति का प्रयोग किया गया है जो साहित्य इतिहास लेखन की निम्न पद्धति है।

:- इस रचना में काल विभाजन का कोई प्रयास नहीं किया गया है व इसमें युगिन प्रवृत्तियों का विवेचन नहीं किया गया है

## शिवसिंह सेंगर

**रचना –** **शिवसिंह सरोज (1883 ई.)**

प्रकाशन – नवलकिशोर प्रेस लखनऊ

विशेष:- **किसी भारतीय का इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास है।**

:- इस रचना में "**1003 कवियों का जीवन चरित**" लिखा गया है।

:- जन्मकाल / मृत्युकाल / रचनाकाल भी दर्शाया गया है परन्तु वर्तमान में उनमें से अधिकांश अविश्वसनीय माने जाते हैं।

:- **हिन्दी वर्णानुक्रम पद्धति में लिखित रचना है।**

भारतीय भाषा के प्रथम इतिहासकार हैं।

:- शिवसिंह ने कालिदास त्रिवेदी द्वारा रचित **कालिदास हजारा** नामक ग्रंथ को प्रमुख आधार बनाया।

:- शिवसिंह ने सातवीं शदी की के कवि पुष्य या पुण्ड को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।

:- यह कवि (पुष्य) भाषा की जड़ है — शिवसिंह सेंगर

:- इस रचना में तत्कालिन समय तक की उपलब्ध हिंदी की समस्त जानकारियों को एक जगह रखने का सराहनीय कार्य किया गया है।

:- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस रचना को "वृत संग्रह मात्र" कहकर पुकारा है।

:- इस रचना में काल-विभाजन का कोई प्रयास नही किया गया है व जन्म। मृत्यु। रचना इत्यादि की तिथियाँ बिना किसी तथ्य के मनमाने तरीके से लिखी है।

:- इस रचना को वर्तमान में इतिहास पुस्तक के रूप में मान्यता नही दि जाती है।

## जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन

रचना - **द मॉडर्न वर्नेक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान — (1888 ई.)**

प्रकाशन - एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल नामक पत्रिका के विशेषांक के रूप में प्रकाशित।

:- 'डा. किशोरीलाल गुप्त' के अनुसार सच्चे अर्थों में हिन्दी साहित्य के सर्वप्रथम इतिहासकार "जॉर्ज अब्राहिम ग्रियर्सन" माने जाते हैं।

नोट :- प्रकाशन वर्ष :-

(i) पत्रिका के वार्षिकांक रूप में - 1888 ई.

:- स्वतंत्र पुस्तक के रूप में - 1889 ई.

विशेष :- यह पुस्तक "अंग्रेजी भाषा" में लिखी गई है।

:- इस रचना में " **कुल 952 कवियों** का उल्लेख किया है जो सभी हिन्दी से संबंधित हैं।

:- डा० किशोरीलाल गुप्त ने ' द मॉडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान का " हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास " शीर्षक से हिन्दी अनुवाद किया। जिसका प्रकाशन 1957 ई. में हुआ।)

:- **ग्रियर्सन ने भक्ति काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग** कहा है।

:- इस रचना में संपूर्ण हिन्दी काव्य निम्नानुसार चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

(i) चारण काव्य
(ii) धार्मिक काव्य
(iii) प्रेम काव्य
(iv) दरबारी काव्य

:- **ग्रियर्सन ने काल विभाजन एवं नामकरण का प्रथम प्रयास किया**

(RPSC. 1st Grade. 2012)

:- मैं आधुनिक भाषा साहित्य का विवरण प्रस्तुत करने जा रहा हूँ → ग्रियर्सन

:- इन्होंने रचना के प्रत्येक अध्याय के अन्त में गौण कवियों को रखा है।

:- **ग्रियर्सन नें हिन्दी साहित्य को निम्नानुसार 12 खण्डों में विभाजित किया गया है।**

(1) चारणकाल
(2) 15 वीं शताब्दी का धार्मिक पुनर्जागरण

(3) जायसी की प्रेम कविता
(4) ब्रज का कृष्ण संप्रदाय
(5) मुगल दरबार
(6) तुलसीदास
(7) रीति काव्य
(8) तुलसी के अन्य परवर्ती कवि
(9) महारानी विक्टोरिया के शासन में हिंदुस्तान
(10) कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान
(11) 18 वीं शताब्दी

:- **ग्रियर्सन नें हिन्दी को अंग्रजी द्वारा आविष्कृत बताया है।**

:- रामचन्द्र शुक्ल ने इस रचना को "**बड़ा वृत संग्रह**" कहकर पुकारा है।

:- महत्वपूर्ण ग्रंथ :-

- द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नॉर्दन हिन्दुस्तान 1888/89
- भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण (द लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया 1902-1909)
- तुलसी का वैज्ञानिक अध्ययन (1886 - 1921 तक)

:- ग्रियर्सन ने तुलसी जी के जीवन पर कुल 12 निबंध लिखे थे। जिनका सर्वप्रथम वाचन "प्राच्य विद्या विशारद सभा वियना" में किया गया था।

दोष:- खण्ड विभाजन में कहीं रचनाकार, कहीं प्रवृत्तियाँ, कही शासन को आधार बनाना इनके ग्रंथ का सबसे बड़ा दोष है।

## मिश्र बंधु

मिश्र बंधु → गणेश बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र

रचना – **मिश्र बंधु विनोद (4 भागों में विभाजित)**

प्रथम तीन भाग - 1913 ई. में प्रकाशित
चौथा भाग - 1934 ई. में प्रकाशन

विशेषता :- यह रचना **हिन्दी भाषा** में रचित है।

:- इसमें **लगभग 5000 (4591 वास्तविक सं.) विवेचन** किया गया है।

:- इस रचना में अनेक अज्ञात कवियों को प्रकाश में लाने के साथ ही उनके साहित्यिक महत्त्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

:- "मिश्रबंधु विनोद" में कवियों का सापेक्षिक महत्त्व निर्धारित करने के लिए उनकी चार श्रेणियाँ बनाई गयी हैं।

:- हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम " **इति वृतात्मक इतिहास** " इसी रचना में पढ़ने को मिलता है।

:*! रीतिकाल के कवियों के परिचय लिखने में मैंने प्रायः उक्त ग्रंथ (मिश्रबंधु विनोद) से ही विवरण लिये हैं → रामचन्द्र शुक्ल

:- संपूर्ण इतिहास को मिश्रबंधुओ ने आठ खण्डो में बांटा जिसकी आलोचना करते हुए **शुक्ल** ने कहा है कि "सारे रचनाकाल को केवल आदि, मध्य, पूर्व, उत्तर इत्यादि खण्डो में आँख मुंदकर बाँट देना और यह भी न देखना कि किस खण्ड के भीतर क्या आता है और क्या नही किसी वृत (चरित्र) संग्रह को इतिहास नही बना सकते है"।

:- आ० रामचन्द्र शुक्ल ने इस रचना को "बड़ा भारी कवितवृत संग्रह व मिश्रबंधुओ को "परिश्रमी संकलनकर्ता" कहकर पुकारा है।

:- मिश्रबंधुओ ने एक अन्य रचना " **हिन्दी नवरत्न** "(1910) में लिखी जिसमें नौ कवियों का वर्णन है जिसे नवरत्न कहा है।

1. कबीर
2. सूरदास
3. तुलसी
4. केशव
5. बिहारी
6. देव
7. चन्दबरदायी
8. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
9. त्रिपाठी बंधु (भूषण, मतिराम)

ध्यान दें → हिन्दी साहित्य में देव बड़े या बिहारी विवाद की उत्पत्ति इसी रचना से मानी जाती है इस विवाद में निम्नविद्वानों ने हिस्सा लिया था।

| विद्वाना | रचना | बड़ा कौन |
|---|---|---|
| मिश्रबंधु | हिन्दी नवरत्न | देव को बड़ा माना |
| पदमसिंह (कमलेश) | बिहारी सतसई की भूमिका | बिहारी को बड़ा माना |
| कृष्ण बिहारी मिश्र | देव और बिहारी | देव को बड़ा माना |
| लाला भगवान 'दीन' | बिहारी और देव | बिहारी को बड़ा माना |

## आ. रामचन्द्र शुक्ल 1884 – 1941

रचना :- हिन्दी साहित्य का इतिहास (1929 ई.)
प्रकाशन :- नागरी प्रचारिणी सभा 'काशी'

:- "हिन्दी साहित्य का इतिहास" रचना जनवरी 1929 में नागरी प्रचारिणी सभा काशी के द्वारा "हिन्दी शब्द सागर" ग्रंथ की भूमिका के रूप में प्रकाशित हुई।

:- "हिन्दी शब्द सागर" ग्रंथ की रचना में तीन विद्वानो का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

**(1) बाबू श्याम सुन्दर दास (2) आ. रामचन्द्र शुक्ल (3) रामचन्द्र वर्मा**

"हिन्दी साहित्य का इतिहास" रचना का द्वितीय परिवर्द्धित व संशोधित प्रकाशन - 1940 ई. में हुआ था।

विशेष :- यह रचना **हिन्दी भाषा** में रचित है।

:- "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में **1000 कवियों / लेखकों** को शामिल किया गया है।

:- इस रचना में लेखन के लिए **समालोचनात्मक शैली** का प्रयोग किया गया है।

:- इन्होंने कवियों की संख्या की अपेक्षा उनके साहित्यिक मूल्यांकन को महत्त्व दिया गया है।

:- शुक्ल जी ने युगीन चेतना को सर्वा० महत्त्व दिया है।

:- इस पुस्तक के लेखन में केदारनाथ पाठक का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

:- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संपूर्ण हिन्दी साहित्य को निम्नानुसार चार काल खण्डों में बांटा है।**

(1) वीरगाथाकाल या आदिकाल 1050 वि. से 1375 वि. स.
(2) पूर्वमध्यकाल या भक्तिकाल 1375 वि.स. - 1700 वि. स.
(3) उत्तरमध्यकाल या रीतिकाल 1700 वि.स. - 1900 वि.स.
(4) गद्यकाल या आधुनिक काल 1900 वि.स. - 1984 वि.स.

:- आ० रामचन्द्र शुक्ल ने वीरगाथा काल या आदिकाल को पुनः दो भागों में बाँटा है।

(i) अपभ्रंशकाल / प्राकृताभास काल - 1050 वि.सं. - 1200 वि. स.
(ii) वीरगाथा काल - 1200 वि.स. - 1375 वि. स.

:- शुक्ल जी ने प्रथम चरण को वीरगाथाकाल नाम देने के लिए इन्होंने निम्न 'बारह रचनाओं' को उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया है। (स० शि० बोर्ड० राज० हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास कक्षा 11,12 पेज० - 13

| रचना | | रचनाकार |
|---|---|---|
| 1. पृथ्वीराज रासो | – | चन्दबरदायी |
| 2. बीसलदेव रासो | – | नरपति नाल्ह |
| 3. परमाल रासो | – | जगनिक |
| 4. हम्मीर रासो | – | शार्ङ्गधर |
| 5. खुमाण रासो | – | दलपत विजय |
| 6. विजयपाल रासो | – | नल्लसिंह |
| 7. जयचंद प्रकाश | – | केदार भट्ट |
| 8. जयमंयक जस चन्द्रिका | – | मधुकर भट्ट |
| 9. कीर्तिलता<br>10. कीर्तिपताका<br>11. पदावली | – | विद्यापति |
| 12. खुसरो की पहेलियाँ | – | अमीर खुसरो |

:- पूर्वमध्यकाल या भक्तिकाल को भी शुक्ल ने निम्नानुसार चार भागों में बाँटकर उसे सर्वप्रथम शुद्ध दार्शनिक एवं धार्मिक आधार पर प्रतिष्ठित किया।

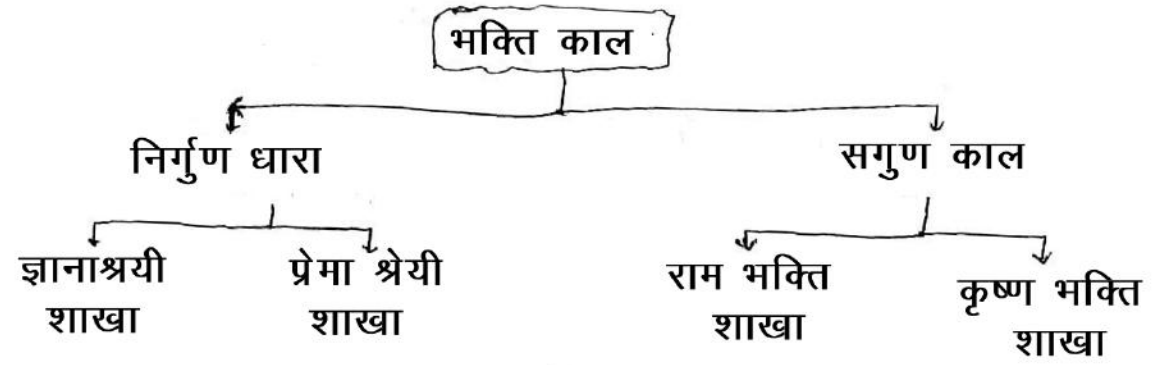


:- गद्यकाल या आधुनिक काल को भी तीन भागों में बांटा है।

(1) प्रथम उत्थान काल (भारतेन्दु युग)
(2) द्वितीय उत्थान काल (द्विवेदी युग)
(3) तृतीय उत्थान काल (छायावादी युग)

- वीरगाथा काल का नाम, तुलसी के प्रति मोह, निर्गुण संतो की उपेक्षा, आदिकाल की सीमा का निर्धारण साम्प्रदायिक कोटि का साहित्य आदि विषयों पर शुक्ल का इतिहास विवादित रहा है।

:- शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में निम्न पुस्तकों की सहायता ली है।

| | |
|---|---|
| मिश्रबंधु विनोद | मिश्रबंधु |
| हिन्दी कोविद रत्नमाला | श्यामसुन्दर दास |
| कविता कौमुदी | रामनरेश त्रिपाठी |
| ब्रजमाधुरी सार | वियोगी हरि |

:- आ० रामचन्द्र शुक्ल द्वारा निम्न अन्य रचनाएँ भी लिखी गयी है।

(1) **रस मीमांसा – मैं द्धांतिक समिक्षा**

(2) महाकवि सूरदास – व्यावहारिक समीक्षा

(3) गोस्वामी तुलसीदास

(4) जायसी ग्रंथावली

(5) **चिन्तामणि (निबंध संग्रह – 4 भाग)**

(6) विश्व प्रपंच (दार्शनिक रचना)

(7) मधु स्रोत (काव्य रचना)

(8) काव्य में रहस्यवाद } आलोचनात्मक रचना

(9) काव्य में अभिव्यंजनावाद } आलोचनात्मक रचना

:- हिन्दी साहित्य ग्रंथ का आरम्भ सिद्धों की वाणियों से किया गया है।

:- **यह विधेय वादी पद्धति का प्रथम ग्रंथ है।**

:- रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का प्रथम क्रमबद्ध इतिहास लिखा है।